The Research Dialogue
An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-2, Issue-3, October-2023
www.theresearchdialogue.com

गिजुभाई का शिक्षा दर्शन एवं वर्तमान में उसकी प्रासंगिकता

जितेन्द्र कुमार
पंजीकरण सं. J20301003
शोध छात्र शिक्षा–संकाय
जे.एस. विष्वविद्यालय, शिकोहाबाद (फिरोजाबाद), उ.प्र.

सारांश

किसी भी शिक्षा दार्शनिक के शिक्षा दर्शन एवं शैक्षणिक विचारधारा पर उसी के जीवन सिद्धान्त एवं जीवन दर्शन का अमिट प्रभाव पड़ता है। श्री गिजुभाई का शिक्षादर्शन भी पूर्ण रूप से उनके जीवन दर्शन से प्रभावित है। गिजुभाई की सहयोगिनी श्रीमती ताराबेन मोडक के शब्दों में, ''गिजुभाई जी एक उच्च कोटि के विद्वान, कुशल शिक्षक, बाल शिक्षाविद्, अद्भुत प्रतिभा वाले शिक्षाशास्त्री, सच्चे देश प्रेमी, त्यागी और तपस्वी व्यक्ति थे।''

व्यक्ति और समाज के पारस्परिक सम्बन्ध के प्रश्न पर पूर्व एवं पाश्चात्य की सभी विचारधाराओं में मतभेद रहा है। कुछ विद्वान व्यक्ति को समाज का आधार मानकर व्यक्तिवाद के समर्थक रहे हैं तो कुछ विद्वान सामाजिक हितों को व्यक्ति से श्रेष्ठ मानकर समाज की श्रेष्ठता को स्वीकार करते रहे हैं। व्यक्तिवादी व्यक्ति को समाज का मूल आधार मानते हैं, अर्थात व्यक्ति ने ही व्यक्ति के कल्याण हेतु समाज की रचना की तथा समाज को मान्यता व्यक्ति द्वारा मिली है। समाज व्यक्तियों का समूह है।

मुख्य शब्द–*शिक्षा दर्शन, आदर्शवादी विचारधारा, रूढ़िवादिता, धर्मान्धता, शाश्वत, प्रयोजनवाद।*

गिजुभाई सत्यं, शिवं, सुन्दरं का सिद्धान्त मानते थे, अर्थात वे शिक्षा में आदर्शवादी विचारधारा के समर्थक थे किन्तु साथ ही रूढ़िवादिता, धर्मान्धता एवं टूटती हुई परम्पराओं के विरोधी थे। सत्यं, शिवं, सुन्दरं पर तो उनकी आस्था थी किन्तु वह सत्य एवं मूल्यों को शाश्वत नहीं मानते थे। उनका विचार था कि बदलती हुई परिस्थितियों के सन्दर्भ में इन मूल्यों की परिभाषा भी बदलनी चाहिए। आज के वैज्ञानिक युग में व्यक्तिवाद, स्वार्थ और होड़ के सिद्धान्तों को छोड़कर सहकारिता के द्वारा ही अपने जीवन में इन

मूल्यों को आत्मसात कर सकते हैं। उपलब्ध साधनों का उचित प्रयोग कर मानव कल्याण की अभिवृद्धि की जा सकती है। इस प्रकार गिजुभाई प्रयोजनवादियों की भाँति सत्य एवं मूल्यों को शाश्वत न मानकर गतिशील एवं परिवर्तनशील मानते हैं। अतः गिजुभाई आदर्शवादी होते हुए भी प्रयोजनवादी दार्शनिक थे।

सामाजिक हितों को सदा वैयक्तिक हितों में सर्वोपरि समझना चाहिए। व्यक्ति जन्म एवं स्वभाव से सामाजिक प्राणी है। जन्म से मृत्यु तक सामाजिक माध्यम द्वारा ही व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास होता है, अर्थात जाति की सामाजिक चेतना में भाग लेने से ही व्यक्ति सर्वगुण सम्पन्न होता है। कुछ विद्वान व्यक्ति के बजाय समष्टि की प्रधानता स्वीकार करते हुए समष्टिवाद की पुष्टि करते हैं। यह विचारक व्यक्ति को समष्टि का अवयव मानते हैं।

गिजुभाई के शिक्षा दर्शन के अनुसार जो शिक्षा स्वाधीनता के मार्ग पर आगे बढ़ने में बच्चों की मदद करे वही प्राणवान शिक्षा कहलाती है। उनका मानना है कि, 'मात्र स्वाधीन व्यक्ति ही स्वराज्य का आनन्द ले सकता है, वस्तुतः उसी के लिए स्वराज्य है।' स्वाधीनता के सुख बहुत हैं, पर कुछ कष्ट भी हैं, उन्हें हम सीमाएँ भी कह सकते हैं। बच्चों की गैर जरूरी मदद को गिजुभाई उसके स्वाभाविक विकास में बाधक मानते हैं। उनके अनुसार व्यक्ति को शिक्षा केवल जीवन की चुनौतियों के लिए तैयार करने एवं रोटी कमाने के लिए ही नहीं वरन् स्वतंत्र राष्ट्र में एक श्रेष्ठ नागरिक के रूप में अपने उत्तरदायित्वों को उचित ढंग से निर्वाह करने के उद्देश्य से दी जानी चाहिए। गिजुभाई के अनुसार विकासमान बालक को स्वतंत्रता दी जानी चाहिए। विकासोन्मुखी परिस्थितियों में से उसको प्रवृत्ति–विशेष के चयन की छूट मिलनी चाहिए, साथ ही साथ प्रवृत्ति में भाग लेने की छूट, रूचि पैदा होने की स्थिति में ही मिलनी चाहिए। वास्तविक अनुशासन का उदय प्रवृत्ति–विशेष से होता है। किसी क्षण, किसी प्रवृत्ति विशेष में बच्चे अपूर्व रस लेने लगते हैं। उस समय उनके चेहरे के भाव ही उनकी संलग्नता एवं एकाग्रता की साक्षी देने लगते हैं। स्वनियमन की दिशा में यही बच्चों का पहला कदम मानना चाहिए।

शिक्षा के द्वारा ही व्यक्ति भावी सन्तानों को पूर्वजों की प्रगति, प्राप्त संस्कृति एवं उपलब्धियों का हस्तान्तरण कराता है। गिजुभाई शिक्षा के द्वारा संस्कृति के हस्तान्तरण के पक्ष में थे किन्तु वह इन उपलब्धियों के आलोचनात्मक अध्ययन पर विशेष बल देते थे। पूर्वजों की उपलब्धियों का हस्तान्तरण एवं ज्ञान, भावी सन्तानों के लिए वह आवश्यक समझते थे किन्तु उसका हस्तान्तरण अन्धविश्वास के साथ नहीं वरन् वर्तमान स्थितियों के सन्दर्भ में समझना अधिक महत्वपूर्ण समझते थे।

गिजुभाई के अनुसार राष्ट्र का निर्माण केवल सड़क निर्माण, बाँध–निर्माण, भवन निर्माण, वाहन–निर्माण या यंत्र निर्माण से नहीं होता है। राष्ट्र का निर्माण होता है राष्ट्र के इंसानों के चरित्र के निर्माण से, और इंसानों के चरित्र का निर्माण होता है राष्ट्रीय शिक्षा–पद्धति से। विवेकानन्द ने इस देश को यह संदेश दिया था कि शिक्षा का कार्य मानव–निर्माण का है। शिक्षा को मनुष्य निर्मात्री बनना होगा। बीसवीं सदी के प्रारम्भिक भाग में हमारे देश में ऐसे अनेक पारम्परिक विचारक पैदा हुए, जिन्होंने शिक्षा को उसके ढर्रे से मुक्त करने की योजनाएँ ही प्रस्तुत नहीं कीं, बल्कि उन योजनाओं के आधार पर तन–मन–धन

से जुटकर नवीन शैक्षिक मार्ग भी प्रशस्त किया। यह भारतीय शिक्षा का मानो स्वर्ण युग था। गुजरात विद्यापीठ, शाँति निकेतन, जामियामिलिया, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, गुरूकुल काँगड़ी, दक्षिणामूर्ति, विद्याभवन तथा हिन्दुस्तानी तालीमी–संघ आदि अनेकानेक नए प्रयोजन शिक्षा के क्षेत्र में शुरू किए गए। श्री गिजुभाई भारतीय शिक्षा के इसी स्वर्णयुग की एक बहुमूल्य देन रहे।

गिजुभाई के 'दिवास्वप्न' की विशेषता यह है कि इसमें वर्तमान शिक्षा की बुराईयों का तथा उन बुराईयों के निराकरण का शास्त्रीय एवं सैद्धान्तिक विवेचन तो बिल्कुल नहीं किया गया है, परन्तु बड़े ही रचनात्मक ढंग से उन बुराईयों की तरफ संकेत करते हुए उनका समाधान ही सुझाया गया है। जिस क्राँति की आवश्यकता वर्तमान शिक्षा में है, उसको एक कहानी के रूप में गिजुभाई ने बड़े ही रोचक, सरल एवं सुपाच्य ढंग से प्रस्तुत किया है, जिससे इस पुस्तक को पढ़ने वाला व्यक्ति अनजाने में ही वर्तमान शिक्षा के दोषों को तथा उनको दूर करने के उपायों को समझ सकता है।

श्री गिजुभाई के शैक्षणिक विचारों को निम्न प्रकार से और अधिक समझा जाता सकता है। वर्तमान शिक्षा मानव–जीवन की सम्पूर्णता या समग्रता को स्पर्श नहीं करती है। साक्षरता तथा किताबी जानकारी और गणितीय दक्षता मानव–जीवन का एक अँग मात्र है, जिसका सम्बन्ध मनुष्य की बुद्धि या उसके दिमाग से है। पर मनुष्य कोरा मस्तिष्क ही तो नहीं है। मनुष्य का एक उत्तम शरीर है, मनुष्य में एक दिल, एक भावना है, मनुष्य में एक अन्तरात्मा या एक नैतिक चेतना भी है। पूरे जीवन के इन समस्त अँगों का षिक्षण संतुलित रूप से होना चाहिए। वास्तव में वर्तमान शिक्षा की गति में जीवन के प्रवाह की सहजता नहीं है, बल्कि उसमें कृत्रिमताओं की भरमार है। कृत्रिम पाठ्यक्रम, कृत्रिम पाठ्य–पुस्तकें, कृत्रिम समय विभाग, कृत्रिम परीक्षा, कृत्रिम प्रमाण पत्र, कृत्रिम प्रतियोगिता और कृत्रिम पुरस्कारों की भरमार से शिक्षा में जीवन की सहजता नष्ट हो गई है।

गिजुभाई के अनुसार छात्र–शिक्षक सम्बन्ध स्नेहमूलक होने चाहिए, स्नेहरूपी जल से सिंचाई होने पर ही शिक्षा दी और शिक्षा ली जा सकती है। अनुशासन के विषय में वे कहते हैं, बालक से कहा जाता है कि चुप बैठो, मत हिलो, हाथों के जीवनोपयोगी कार्यों से परहेज करो। ऐसी बातों में अनुशासन एवं शिक्षा या बालकों का सुधरना माना जाता है। जबकि यह जीवन तथा उसके निर्वाह के मूल नियम के विपरीत है। उनके अनुसार बालक को देश, काल तथा अन्य पात्रों से सम्बद्ध किया जाना चाहिए। उसे बताया जाना चाहिए कि जिस प्राकृतिक परिवेश में वह रहता है, उससे उसका क्या सम्बन्ध है, जिस काल या जिस जमाने में वह जी रहा है, उससे उसका क्या सम्बन्ध है, और जिन अन्य मनुष्यों के साथ वह जी रहा है उन मनुष्यों से उसका क्या सम्बन्ध है। वस्तुतः शिक्षा का तो लक्ष्य ही एक है कि व्यक्ति को उसके भौगोलिक, ऐतिहासिक एवं सामुदायिक परिवेश से सुसम्बद्ध अथवा समायोजित कर दिया जाए। छात्र एवं शिक्षक को अपनी शिक्षा की योजना बनाने में तथा उस योजना के क्रियान्वयन में कोई भी स्वाधीनता या स्वायत्तता नहीं है, जबकि सारी शिक्षा का यह एक माना हुआ साध्य है कि शिक्षा मनुष्य को स्वावलम्बी, स्वायत्त, स्वाधीन या स्वतंत्र बनाने का साधन है। वर्तमान शिक्षा तो ठेठ से ही पराधीनता की साधना या

पराधीनता का 'प्रतिष्ठित' अभ्यास है और आगे जाकर भी पराधीनता को अपनाने के ध्येय से आज के विद्यार्थी हमारे स्कूलों में शिक्षा पा रहे हैं। पराधीन शिक्षा से पराधीन नागरिक ही तैयार किए जा सकते हैं। 'सा विद्या या विमुक्तये' वाली बात हमारे वर्तमान स्कूलों में नहीं है। आज का शिक्षक एक स्वप्रेरित एवं स्वावलम्बी तथा स्वाभिमानी शिक्षक नहीं है, बल्कि यह भाड़े का टट्टू है, क्योंकि दूसरे लोग उसे आदेश देते हैं कि वह कब, क्या, कितना तथा कैसे पढ़ाए और उस आदेश का पालन करने हेतु दूसरे लोग उसको तनख्वाह या भाड़े को चुकाते हैं। न तो शिक्षक को छूट है कि वह जो उचित समझे सो पढ़ाए और न छात्रों को छूट है कि जो चाहें सो पढ़ें। इस प्रकार शिक्षा बंधनाभ्यास बन गई है और शिक्षित व्यक्ति को स्वाधीनता की ओर कभी नहीं ले जा सकती है। जिस देश की शिक्षा ही बंधनाभ्यास बन जाए, उस देश की स्वाधीनता की क्या स्थिति होगी, यह आसानी से सोचा जा सकता है। हमारी वर्तमान शिक्षा की हालत यह है कि यदि मैं एक अच्छा मनुष्य हूँ भी, तो मैं अपने आपको तब तक अच्छा नहीं मानूँगा, तब तक अपनी अच्छाई से संतुष्ट तथा आनन्दित एवं आश्वस्त नहीं होऊँगा, जब तक कोई दूसरा व्यक्ति जोकि समाज में मुझसे बड़ा माना जाता हो, सत्ता– सम्पदाधीश हो, अन्य प्रतियोगियों में से अलग छाँट करके मुझे अच्छाई का कोई प्रमाण पत्र या पुरस्कार नहीं दे दे। इस प्रकार अपने सद्गुण विकास, अपने सद्गुण विश्वास तथा अपने सद्गुणानन्द तक में हम पराधीन बनाए जा रहे हैं और हमें 'प्रतियोगिता' में डालकर ईर्ष्यालु बनाया जा रहा है, मनुष्य के लिए यह एक दयनीय स्थिति है।

गिजुभाई ने शिक्षा के सम्बन्ध में अपने विचार प्रकट करते हुए लिखा है कि यदि शिक्षा को कुशलतापूर्वक अपना कार्य सम्पन्न करना है तो इसे नए आधार एवं नए समाज के निर्माण में तथा अन्य राष्ट्रों के साथ प्रेम एवं सद्भाव के साथ रहने में सहायक सिद्ध होना चाहिए।

गिजुभाई के विचार में राष्ट्रीय एकरूपता का यह कार्य सौहार्दपूर्ण वातावरण में सांस्कृतिक प्रक्रियाओं द्वारा ही ठीक–ठाक तौर पर हो सकता है। वे लोकतांत्रिक चरित्र और जीवन का पूर्ण विकास ही अपनी शिक्षा पद्धति का मूल सामाजिक आदर्श मानते थे। जब तक जनता में सामाजिक व राजनैतिक चेतना उत्पन्न नहीं होती है तब तक लोकतांत्रिक पद्धति की समरूपता संभव नहीं है। इसलिए लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए व्यापक शिक्षा सबसे आवश्यक है। गिजुभाई शिक्षा के व्यापक प्रसार के पक्ष में थे और उनकी प्रबल इच्छा थी कि प्राथमिक स्तर से लेकर उच्च स्तर तक की शिक्षा देश के सभी विद्यालयों के लिए निःशुल्क कर दी जाए। कोई भी ऐसी जाति एवं वर्ग नहीं है जो मानव समाज के सांस्कृतिक भण्डार से लाभ न उठा सके। इसलिए शिक्षा की व्यापकता, राष्ट्र के सांस्कृतिक उत्कर्ष में बड़ी सहायक होगी। बौद्धिक सम्पत्ति को बढ़ाएगी और उसे संसार के दूसरे सभ्य राष्ट्रों के समान बनाने में मद्द करेगी। इस आशय से गिजुभाई ने अखिल भारतीय शिक्षा सम्मेलन के उनके अहमदाबाद अधिवेशन में अध्यक्षीय पद से दिए गए भाषणों में यह स्पष्ट कर दिया था कि ''सम्पूर्ण राष्ट्र को अपने चारों ओर के खतरे के प्रति, इस समय सर्वोत्कृष्ट बुद्धिमत्ता और साहस की आवश्यकता है। भारतीय जनता की वर्तमान आवश्यकता और आकांक्षाओं की पूर्ति करने के लिए आधारभूत जीवन दर्शन में क्रांतिकारी परिवर्तन की आवश्यकता है। राष्ट्रीय जीवन को नवीन

ढाँचे में पुनः शिक्षित करना तथा ढालना पड़ेगा।'' जीवन को नवीन ढाँचे में शिक्षित करने के लिए गिजुभाई ऐसा सोचते थे कि केवल शिक्षण संस्थाएँ ही ऐसी सशक्त माध्यम हैं जोकि भारतवर्ष के भावी नागरिकों को इस नव–जीवन के लिए नेतृत्व प्रदान कर सकती हैं। विद्यालय विचार केन्द्र बन सकते हैं और राष्ट्र की आवश्यकता पूरी कर सकते हैं।

गिजुभाई जी चाहते थे कि आधुनिक युग में शिक्षा का सामाजिक प्रयोजन होना चाहिए। शिक्षा के सम्बन्ध में शास्त्रवादी और परम्परावादी विचार के बदले अधिक व्यापक और गत्यात्मक विचार को स्थान मिलना चाहिए। राष्ट्रीय एकता की उपलब्धि की दृष्टि से ही गिजुभाई जी ने देश में इस प्रकार के सामान्य विद्यालयों की स्थापना की अनुशंसा की, जिनमें सभी वर्गों, जातियों, सम्प्रदायों एवं धर्मों के बालकों को बिना किसी भेदभाव के समान रूप से शिक्षा दी जाए क्योंकि वर्तमान शिक्षा संस्थाएँ जातिगत, पक्षपात और साम्प्रदायिक वातावरण से दूषित होने के कारण न तो विभिन्न जाति, वर्ग एवं सम्प्रदाय के बालकों की भावनाओं को एक सूत्र में बाँधने में सफल हो सकती हैं और न ही लोकतांत्रिक शिक्षा के केन्द्र बन सकती हैं। वास्तव में आज का युग, राष्ट्रीयता का युग है सभी देश अपने निवासियों में राष्ट्रीयता की भावना का विकास करने में जुटे हुए हैं। राष्ट्रीयता की भावना में देश प्रेम और देशभक्ति के तत्व निहित हैं, जो देश के निवासियों को एकता के सूत्र में बाँधने का प्रयास करते हैं। राष्ट्रीय भावना को विकसित करने में शिक्षा महत्वपूर्ण योगदान दे सकती है। बच्चों में प्रारम्भ से ही राष्ट्रीय चेतना की उत्पत्ति के लिए प्रयत्न किया जा सकता है। बच्चों में इस चेतना का विकास करने के लिए परिवार, विद्यालय और समाज का स्थान महत्वपूर्ण है। इन सबमें विद्यालय का स्थान अधिक ऊँचा है।

पण्डित जवाहर लाल नेहरू ने एक सम्मेलन में कहा था कि–''राष्ट्रीयता एक ऐसा विचित्र तत्व है जो एक देश के इतिहास में जहाँ जीवन, विकास, शक्ति और एकता का संचार करता है, वहीं उसे संकुचित बनाता है, क्योंकि इसके कारण एक व्यक्ति अपने देश के बारे में संसार के अन्य देशों से पृथक रूप में सोचता है।''

गिजुभाई के अनुसार, ''राष्ट्रीय एकता नागरिकों में, एकता, सुदृढ़ता, भक्ति एवं राष्ट्रप्रेम की भावना का विकास है। यह भ्रातृत्व एवं राष्ट्रीयता की सुदृढ़ भावना है। यह व्यक्तिगत हितों का राष्ट्रीय हित के लिए त्याग की भावना है। यह एक मनोवैज्ञानिक घटना एवं एकता की भावना है जो समस्त संकुचित तथा विघटनकारी प्रवृत्तियों से ऊपर उठकर आती है और नागरिकों को राष्ट्रप्रेम तथा राष्ट्र की उन्नति के लिए तत्पर बनाती है। हमें अपने देश की नवजात स्वतंत्रता को सबल बनाना और उसको सुरक्षित रखना, अपना सर्वप्रथम कर्त्तव्य समझना चाहिए।

श्री गिजुभाई बधेका के अनुसार बच्चों में राष्ट्रीय एकता की भावना का प्रचार–प्रसार प्राथमिक स्तर से ही प्रारम्भ कर देना चाहिए। इसके अन्तर्गत उनके पाठ्यक्रम में लोकगीतों और कहानियों को पर्याप्त स्थान मिलना चाहिए। यह ध्यान दिया जाए कि कहानियाँ भारत के विभिन्न क्षेत्रों से चुनी जाएँ। बालकों को विभिन्न क्षेत्रों– जैसे साहित्य, कला, विज्ञान, अंतरिक्ष, इतिहास आदि से महान् व्यक्तियों के जीवन से

परिचित कराया जाना चाहिए। सामाजिक जीवन की दशाओं का सरलतम ज्ञान दिया जाए तथा प्रत्येक क्षेत्र के मानव–भूगोल की जानकारी कराई जाए। बालकों को राष्ट्रीय गीत, राष्ट्रीय झण्डे और अन्य राष्ट्रीय चिन्हों का पूर्ण ज्ञान कराया जाना चाहिए। बच्चों को राष्ट्रीय त्योहारों से सम्बन्धित सभी जानकारी दी जाए तथा हर्षोल्लास के साथ मनाया जाना चाहिए। इन सभी बातों का पालन करने से बालकों में राष्ट्रीय प्रेम, एकता की भावना प्रज्जवलित होगी तथा वे देश हित की बात सोचेंगे व व्यवहार करेंगे। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि गिजूभाई के शिक्षा दर्शन संबंधी विचारों की वर्तमान में महत्वपूर्ण उपयोगिता है।

निष्कर्ष :

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि गिजुभाई के अनुसार शिक्षा के दायित्व का भार राज्य के ऊपर हो और राज्य उदारतापूर्वक अनुदान दे। उनके अनुसार विशुद्ध उपयोगिता की दृष्टि से शिक्षा का नवनिर्माण किया जाए। सामाजिक और सांस्कृतिक रूप में शिक्षा की महत्ता स्वीकार की जाए। शिक्षा की उपादेयता एवं महत्व बतलाते हुए पुरानी लकीर से हटकर नए समाज के संदर्भ में पुनर्गठन पर बल दिया जाए। उच्च शिक्षा में वैज्ञानिक और यांत्रिक शिक्षा तथा शिक्षा सुविधाओं के निरन्तर प्रसार पर बल दिया जाए। आधुनिक युग में शिक्षा का निर्माण सामाजिक हित एवं सामाजिक प्रयोजन के लिए होना चाहिए।

शिक्षा के सम्बन्ध में शास्त्रवादी और परम्परावादी विचार के स्थान पर अधिक व्यापक और गत्यात्मक विचार को स्थान मिलना चाहिए। शिक्षा का उद्देश्य युवक को भावी जीवन के लिए तैयार करना है किन्तु जीवन की परिस्थितियाँ निरन्तर परिवर्तित होती रहती हैं। अतः शिक्षा स्थिर जीवन दर्शन पर आधारित नहीं होनी चाहिए। शिक्षा के द्वारा विद्यार्थियों में उन मूल्यों एवं विचारों की प्रतिष्ठा की जाए, जो आधुनिक युग की प्रगति के लिए आवश्यक हैं। विज्ञान एवं यंत्र कला की शिक्षा सामाजिक हित के कार्यों में नियोजित की जाए। पाठ्यक्रम में सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों को उचित स्थान दिया जाए, जिससे आध्यात्मिक एवं सामाजिक विकास हो। आधुनिकीकरण के आवेश में भूत की उपेक्षा नहीं जा सकती है क्योंकि आधुनिकता के निर्माण में भूत की उपलब्धियाँ अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। शिक्षा के द्वारा हम भूत की विवेकपूर्ण परीक्षा करें और आधुनिक अनुभवों के प्रकाश में उसका उचित मूल्यांकन करें।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :

1. गिजुभाई का शिक्षा में योगदान, भारतलाल पाठक, पृष्ठ–43, सुरजीत प्रकाशन, बीकानेर, 1983
2. 'शिक्षा के सरोकार' – अनौपचारिका मासिक पत्रिका– डा0 रेणु शाह, पृष्ठ–27, राजस्थान प्रौढ़ शिक्षा समिति, 2005
3. वसुधैव कुटुम्बकम्– गिजुभाई बधेका, पृष्ठ–22, कल्याणी प्रिंटर्स, बीकानेर, 2001
4. वसुधैव कुटुम्बकम् – गिजुभाई बधेका, पृष्ठ–17, कल्याणी प्रिंटर्स, बीकानेर, 2001
5. सभ्यता और संस्कृति – गिजुभाई बधेका, पृष्ठ 25, सांखला प्रिंटर्स, बीकानेर, 1955
6. बाल शिक्षण प्रणेता गिजुभाई – रामनारायण पाठक, पृष्ठ 98, कल्याणी प्रिंटर्स, बीकानेर, 1995

THE RESEARCH DIALOGUE

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed /Refereed National Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-2, Issue-3, October-2023
www.theresearchdialogue.com
Certificate Number October-2023/33
Impact Factor (IIJIF-1.561)
https://doi-ds.org/doilink/01.2023-11922556

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

जितेन्द्र कुमार

for publication of research paper title

गिजुभाई का शिक्षा दर्शन एवं वर्तमान में उसकी प्रासंगिकता

Published in 'The Research Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and E-ISSN: 2583-438X, Volume-02, Issue-03, Month October, Year-2023.

Dr. Neeraj Yadav
Executive Chief Editor

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Editor-in-chief

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.theresearchdialogue.com

INDEXED BY